विश्व इतिहास

खण्ड-II

- **प्रबोधन**
- **अमेरिकी क्रांति एवं अमेरिकी गृहयुद्ध**
- **फ्रांस की क्रांति**
- **19वीं सदी में उदारवाद तथा राष्ट्रवाद का प्रसार एवं यूरोप पर उनका प्रभाव**

खण्ड-II के सभी टॉपिक परस्पर संबद्ध हैं। आप समग्रता में ही परिवर्तन को रेखांकित कर सकते हैं। इन्हें पढ़ते हुए आप निम्नलिखित तथ्यों को रेखांकित कर सकेंगे-

- *प्रबोधन के माध्यम से मध्यवर्ग की महत्त्वाकांक्षा व्यक्त होती है।*
- *अमेरिकी क्रांति एवं फ्राँस की क्रांति उस महत्त्वाकांक्षा के क्रियान्वयन के क्रम में घटित हुईं तथा इनके कारण यूरोप में अनेक परिवर्तनों का सूत्रपात हुआ।*
- *नेपोलियन की पराजय (1815 ई.) के पश्चात् वियना कॉन्ग्रेस ने फ्राँस की क्रांति के विचारों को दबाने तथा इतिहास की धारा को पीछे मोड़ने का प्रयास किया, परंतु वह विफल हो गई तथा 'उदारवाद' एवं 'राष्ट्रवाद' जैसी विचारधाराएँ संपूर्ण 19वीं सदी में यूरोप में क्रांति एवं बदलाव लाती रहीं।*

(परन्तु अभ्यर्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर अध्ययन सामग्री उन्हें उपखंडों में प्रदान की जाएगी, ताकि उन पर अध्ययन का अधिक दबाव न पड़े।)

-मणिकांत सिंह

■ **प्रबोधन का शाब्दिक अर्थ:**

• प्रबोधन का शाब्दिक अर्थ- एक लंबे काल के अंधकार के पश्चात् ज्ञान का प्रकाश है। यहाँ अंधकार का तात्पर्य अज्ञान, अंधविश्वास, असहिष्णुता और अतीत के प्रति दासता-बोध से है, जबकि प्रकाश का तात्पर्य ज्ञान से है।

■ **प्रबोधन का आधार अथवा कारण:**

• जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है प्रबोधन एक बौद्धिक आंदोलन था, परंतु इस बौद्धिक आंदोलन का एक मज़बूत भौतिक आधार था। बदलते हुए वर्ग समीकरण ने प्रबोधन का सामाजिक आधार निर्मित किया। वस्तुत: 14वीं सदी से 18वीं सदी के बीच के काल में यूरोप परिवर्तनों की प्रक्रिया से गुजरता रहा था। इसके परिणामस्वरूप 18वीं सदी में शक्ति के दो केन्द्र उभरकर आये, एक था निरंकुश राजतंत्र और दूसरा था महत्वाकांक्षी मध्यवर्ग।

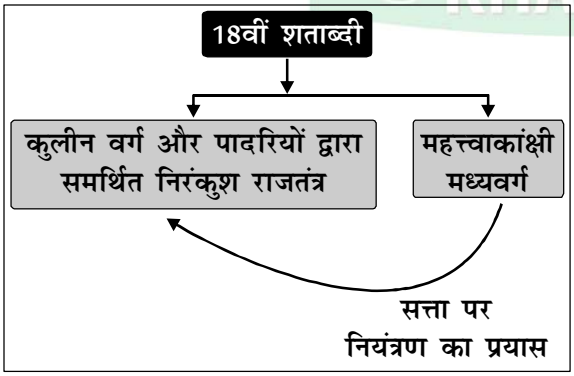

• अब तक मध्यवर्ग ने राजतंत्र का साथ दिया था, परन्तु 18वीं सदी तक मध्यवर्ग में शक्ति और आत्मविश्वास आ चुका था। अत: मध्यवर्ग ने राजतंत्र को चुनौती देनी आरम्भ कर दी। वहीं राजतंत्र ने अपनी निरंकुश शक्ति को बनाये रखने के लिए अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वी कुलीन वर्ग और चर्च के साथ एक गठबन्धन बनाने का प्रयास किया। फिर भी मध्यवर्ग पीछे नहीं हटा और उसने राजतंत्र, कुलीन वर्ग तथा चर्च के समक्ष माँगों की एक तालिका रख दी। एक दृष्टिकोण से अगर देखा जाये तो यही प्रबोधन था।

• 17वीं शताब्दी की वैज्ञानिक क्रांति ने लोगों का अपने आस-पास की वस्तुओं को देखने का नज़रिया बदल दिया। इस वैज्ञानिक क्रान्ति का प्रभाव मानव चेतना पर भी पड़ा। उभरते हुये मध्यवर्ग ने वैज्ञानिक विचारधारा का उपयोग अपने पक्ष में किया और उसके समर्थन से अपनी माँगों को और भी मजबूत बनाया।

■ **प्रबोधन की विशेषताएँ एवं उसका विचार-**

1. राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र की बुनियादी समस्याओं को हल करने के लिये वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग पर बल दिया गया।
2. तर्कवाद को ज्ञान का आधार माना गया और साथ ही यह भी माना गया कि तर्कवाद से निर्देशित मनुष्य का भविष्य उज्ज्वल है।
3. राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं को अपने प्राकृतिक नियमों के अनुसार कार्य करना चाहिये और इसमें बाह्य हस्तक्षेप की कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिये।
4. प्रबोधन ने आशावादी नज़रिया प्रस्तुत किया जिसमें मानव जीवन में खुशहाली पर ज़ोर दिया गया तथा मोक्ष एवं मुक्ति के आदर्शों को त्याग दिया गया।

■ **प्रबोधन के प्रमुख चिंतक एवं उनके विचार-**

• माना जाता है कि प्रबोधन का उद्भव तब हुआ जब एक फ्राँसीसी चिन्तक वाल्तेयर ने ब्रिटेन की यात्रा की। फिर उसने फ्रांसीसी बन्द समाज की तुलना ब्रिटेन के खुले समाज से की। प्रबोधन का सबसे अधिक प्रभाव फ्राँस तथा ब्रिटेन पर देखा गया। इसके बाद इसका प्रसार अन्य क्षेत्रों में हुआ।

• प्रबुद्ध चिन्तकों से तात्पर्य वैसे चिन्तकों से है जो प्रबोधन के मूलभूत विचारों को मानकर चलते थे अर्थात् वे तर्क एवं वैज्ञानिक पद्धति को मानव जीवन का कारगर हथियार मानते थे। इन चिन्तकों में एक महत्वपूर्ण फ्रांसीसी चिन्तक **वाल्तेयर** ने व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए राजतंत्र की शक्ति एवं चर्च के नियंत्रण पर अंकुश लगाना चाहा। उसी प्रकार, **दिदरो** ने भी विश्वकोष की रचना कर राजतंत्रवादी निरंकुशता की ओर लोगों का ध्यान खींचा। **मॉन्टेस्क्यू** ने

अपनी कृति 'स्पिरिट ऑफ लॉज' (Spirit of Laws) में शक्ति पृथक्करण का सिद्धांत दिया। इसके अनुसार, कार्यपालिका, विधानमण्डल एवं न्यायपालिका, सरकार के इन तीनों अंगों को एक-दूसरे से पृथक् होना चाहिए। उसका मानना था कि इससे राजतंत्र की निरंकुशता स्वयं सीमित हो जायेगी। उसी प्रकार, एक ब्रिटिश चिन्तक **जॉन लॉक** ने व्यक्ति की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने के लिए सीमित राजतंत्र की अवधारणा रखी। इस प्रकार, प्रबोधन ने आधुनिक संविधानवाद की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया।

- परन्तु यह भी गौर करने की बात है कि उस काल के सभी चिन्तक प्रबोधन के विचार को नहीं मानते थे। उदाहरण के लिए, **रूसो** प्रबोधन के युग में पैदा होने के बाद भी अन्य चिन्तकों से पृथक् विचार रखता था। जहाँ अन्य प्रबुद्ध चिन्तकों का बल तर्कवाद एवं वैज्ञानिक पद्धति पर रहा था, वहीं रूसो का बल भावावेश (Emotions) पर था। फिर, जहाँ अन्य प्रबुद्ध चिंतक संवैधानिक राजतंत्र की बात करते थे, वहीं रूसो प्रजातंत्र की। उसने व्यक्ति की जगह समुदाय के महत्व को बल दिया तथा यह घोषित किया कि सामान्य इच्छा ही संप्रभु की इच्छा है। वे समाजवाद तथा आधुनिक राष्ट्रवाद के भी जनक माने जाते हैं।

■ **प्रबोधन का प्रभाव:**

- प्रबोधन ने समकालीन राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना को नवीन वैचारिक आधार प्रदान किया-
- **राजनीतिक क्षेत्र**- इसने निरंकुश राजतंत्र को अस्वीकार कर **'सीमित राजतंत्र'** अथवा **'संवैधानिक राजतंत्र'** का मॉडल प्रस्तुत किया। इसके अनुसार राजतंत्र को एक निर्वाचित विधानमंडल की सहायता से शासन करना चाहिये, यद्यपि ऐसा विधानमंडल सीमित मताधिकार के आधार पर निर्वाचित हो, न कि सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर। ब्रिटिश दार्शनिक जॉन लॉक ने राजतंत्र के संदर्भ में नवीन मॉडल की परिकल्पना की।
- **आर्थिक क्षेत्र**- अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में प्रबोधन ने 'वाणिज्यवाद' का विरोध कर **'मुक्त व्यापार'** (Laissez Faire) की वकालत की। प्रबोधन युग के महान ब्रिटिश अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने अपनी महानतम कृति 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' में मुक्त व्यापार नीति के माध्यम से देशों की राष्ट्रीय समृद्धि में वृद्धि का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार जिस प्रकार प्रकृति के नियम निश्चित हैं, उसी प्रकार बाजार के भी निश्चित नियम हैं। ये नियम हैं- माँग और पूर्ति के नियम।
- **सामाजिक क्षेत्र**- सामाजिक क्षेत्र में प्रबोधन ने **व्यक्तिवाद एवं व्यक्तिगत स्वतंत्रता** के विचार को बढ़ावा दिया। प्रबुद्ध चिंतक मोंटेस्क्यू ने अपने लेख 'स्पिरिट ऑफ लॉज़' में सरकार के तीन अंगों के पृथक्करण की अपील की, ताकि व्यक्तिगत स्वतंत्रता को संरक्षित किया जा सके। इस प्रकार, प्रबोधन के दौरान तथाकथित गणतांत्रिक अथवा लोकतांत्रिक विचारों के बीज बोए गए थे।

■ **प्रबोधन की सीमाएँ:** इसकी अद्वितीय प्रकृति के बावजूद इसकी कुछ सीमाएँ भी थीं-

- प्रबोधन पर पितृसत्तावाद (पुरूषों की प्रधानता) का प्रभाव था, महिलाओं के अधिकारों की बात नहीं उठायी गयी थी।
- प्रबोधन ने मध्यवर्ग के अधिकारों की बात उठायी तथा सीमित मताधिकार की बात की, परन्तु इसने निम्न वर्ग का तिरस्कार किया। प्रबुद्ध चिन्तकों के अनुसार, सरकार जनता के लिए तो होनी चाहिए, परन्तु जनता के द्वारा नहीं।
- इसके तहत मानव अधिकार एवं व्यक्ति की स्वतंत्रता की समस्त अवधारणा केवल यूरोप के लिए थी, उपनिवेशों के लिए नहीं।

■ **तर्कवाद को चुनौती:**

- प्रबोधन के विचारों को आरंभिक चुनौती स्वयं प्रबोधन के काल में ही एक विद्वान जीन जैक्विस रूसो के द्वारा मिली थी। उन्होंने तर्कवाद पर प्रश्न उठाया तथा तर्क की जगह भावावेश (Emotions) पर बल दिया।
- वर्तमान में उत्तर आधुनिकतावाद से प्रबोधन के विचारों को चुनौती मिली है। प्रबोधन के द्वारा प्रेरित आधुनिकतावाद ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया था कि तर्क की पद्धति एवं विज्ञान सत्य तक पहुँचने का एकमात्र साधन है। उत्तर आधुनिकतावाद के विचार में इस प्रकार का दावा सर्वाधिक अनुचित है, न तो कोई एकमात्र सत्य है और न ही उस सत्य तक पहुँचने का कोई एक मार्ग।

■ **अमेरिकी क्रांति से प्रबोधन का संबंध :**

- अमेरिकी समाज तथा यूरोपीय समाज के लोग अलग-अलग पृष्ठभूमि से आये थे। उनका कोई सामान्य अतीत नहीं था, परंतु वे एक समान लक्ष्य से जरूर बँधे हुए थे। औसत अमेरिकी अपने दृष्टिकोण में आशावादी थे और परिवर्तन के प्रति उत्साहित थे। वहीं दूसरी तरफ, प्रबोधन आशावाद से भरा हुआ था। इसलिए प्रबोधन की अपील अमेरिकी लोगों तक बड़ी शीघ्रता से पहुँच गयी। कहा जाता है कि दो अमेरिकी नेता टॉमस जैफरसन और बेंजामिन फ्रैंकलिन ने यूरोप की यात्रा की थी और प्रबोधन के विचारों से प्रभावित होकर अमेरिका लौटे थे।

■ **फ्राँस की क्रांति से प्रबोधन का संबंध :**

- 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रांति का एक कारण प्रबोधन को

माना जाता रहा है, परन्तु यह समझने की जरूरत है कि यह क्रांति का वास्तविक कारण नहीं था। अधिकांश विचारक सुधारक थे, क्रांतिकारी नहीं। लगभग सभी विचारक स्वयं उच्च वर्ग से आए थे तथा व्यवस्था में सुधार लाकर एक प्रबुद्ध राजतंत्र अथवा संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना का लक्ष्य रखते थे, परन्तु वे प्रतिनिध्यात्मक अथवा लोकप्रिय सरकार की स्थापना के पक्षपाती नहीं थे। इन विचारकों ने किसी राजनीतिक दल अथवा क्रांतिकारी संगठन बनाने में रूचि नहीं दिखाई और न ही उन्होंने कोई रेडिकल नीति अथवा कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उनमें से किसी ने भी 1789 ई. की फ्रांसीसी क्रांति में प्रत्यक्ष रूप में हिस्सा नहीं लिया।

अंतर्अनुशासनात्मक

आधुनिक संविधान का विकास: प्रबोधन ने निर्वाचित विधानमंडल तथा संवैधानिक राजतंत्र की अवधारणा रखकर आधुनिक संविधान के विकास की दिशा में कदम उठाया।

ब्रिटेन में यह प्रक्रिया प्रबोधन से पहले ही आरंभ हो गई थी। ब्रिटेन में राजतत्र अपने को निरंकुश शासक की तरह स्थापित करने का प्रयास कर रहा था, परंतु वहाँ एक पार्लियामेंट नामक संस्था का विकास हुआ, जिसने राजतंत्र के साथ एक लंबा संघर्ष किया। इसके परिणामस्वरूप धीरे-धीरे पार्लियामेंट की शक्ति बढ़ती गई और राजतंत्र की शक्ति सीमित होती गई। गौरतलब है कि 1215 ई. में ब्रिटिश किंग जॉन को एक अधिकार-पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ा था, जिसे 'ब्रिटिश मैग्नाकार्टा' के नाम से जाना गया। इसे विश्व में मानवाधिकार का स्रोत माना जाता है। फिर 17वीं सदी में पार्लियामेंट ने अपनी स्थिति मज़बूत कर ली और 1688 ई. में गौरवपूर्ण क्रांति हुई तथा पार्लियामेंट ने एक शासक को हटाकर दूसरे शासक को स्थापित कर दिया। इस प्रकार ब्रिटेन में संविधानवाद का विकास हुआ और यह बात निश्चित हो गई कि विधानमंडल के बिना कार्यपालिका शासन नहीं कर सकती, परंतु ब्रिटिश संविधान ने बिल्कुल ही एक नया मॉडल प्रस्तुत किया और वह था- राजतंत्र, कुलीनतंत्र एवं जनतंत्र का मिश्रण।

एक तरह से अगर देखा जाए तो प्रबोधन काल के चिंतकों पर ब्रिटिश मॉडल का गहरा प्रभाव था। अत: स्वाभाविक रूप में कुछ चिंतक संविधानवाद की दिशा में बढ़ गए तथा उन्होंने राजतंत्र की निरंकुशता पर अंकुश लगाने की मांग की। एक फ्राँसीसी चिंतक मॉन्टेस्क्यू ने लोगों की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के लिये शक्ति पृथक्करण की अवधारणा दी। आगे इसने अमेरिकी संविधान के स्वरूप को भी प्रभावित किया।

आर्थिक नीति में बदलाव: जैसा कि हमने देखा कि एडम स्मिथ ने क्लासिकल अर्थशास्त्र की नींव डाली। उसका मानना था कि बाज़ार बहुत विवेकशील है, इसलिये अर्थव्यवस्था को बाज़ार की शक्तियों पर छोड़ दिया जाना चाहिये। उसी आधार पर उसने 'मुक्त अर्थव्यवस्था' की बात कही। उसके अनुसार बाज़ार की शक्तियों के माध्यम से उत्पादक, श्रमिक तथा उपभोक्ता के हितों के बीच स्वाभाविक रूप में सामंजस्य होता चलता है। अगर उत्पादक अपने उत्पाद की कीमत अधिक लगाता है, तो उपभोक्ता उसे नहीं खरीदेंगे। उसी तरह, अगर उपभोक्ता एक खास सीमा से नीचे की दर पर वस्तु खरीदना चाहेगा, तो उत्पादक अपने उत्पाद उसे नहीं बेचेंगे। दूसरी तरफ, अगर उत्पादक श्रमिकों को उचित मज़दूरी नहीं देंगे, तो श्रमिक काम नहीं करेंगे। इसके विपरीत, अगर श्रमिक अधिक मज़दूरी की माँग करेंगे तो पूँजीपति उन्हें रोज़गार नहीं देंगे। इस प्रकार, एक-दूसरे के हित परस्पर संतुलित होते रहेंगे। उसने इसी क्रम में 'संतुलन (Equilibrium) के सिद्धांत' की अवधारणा दी। आगे उसके मुक्त अर्थव्यवस्था (Laissez Faire) के सिद्धांत को डेविड रिकार्डो जैसे अन्य अर्थशास्त्रियों का भी समर्थन मिला। इस प्रकार, क्लासिकल अर्थशास्त्र का विकास हुआ। क्लासिकल अर्थशास्त्र बाज़ार को सर्वाधिक विवेकशील मानता था। उसके विचार में उत्पादन (Production) एवं खपत (Consumption) के बीच स्वाभाविक संतुलन होता चलता है।

अधिक उत्पादन का अर्थ है, अधिक रोज़गार तथा अधिक रोज़गार का अर्थ है, अधिक माँग का सृजन। परंतु आगे की घटनाएँ इस मान्यता पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं।

Food for Thought

- प्रबोधन को मध्यवर्गीय दृष्टिकोण मानना क्यों उचित है?
- आपके विचार में प्रबोधन को आधुनिक युग का प्रवर्तक मानना कहाँ तक उचित है?
- प्रबोधन ने किस रूप में संवैधानिकता के विचार की आधारशिला रखी?
- उत्तर आधुनिकतावाद ने प्रबोधन के विचार को क्यों अस्वीकार कर दिया?

■■■